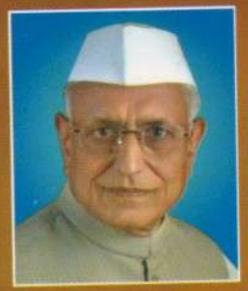

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल का नाम आज जैन समाज के उच्चकोटि के विद्वानों में अग्रणीय है।

ज्येष्ठ कृष्ण अष्टमी वि.सं. 1992 तदनुसार शिनवार, दिनांक 25 मई, 1935 को ललितपुर (उ.प्र.) जिले के बरौदास्वामी ग्राम के एक धार्मिक जैन परिवार में जन्मे डॉ. भारिल्ल शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न तथा एम.ए., पी.-एच.डी. हैं। मंगलायतन विश्वविद्यालय द्वारा आपको डी-लिट् की मानद उपाधि प्रदान की गई है। समाज द्वारा समय-समय पर आपको विद्यावारिधि, महामहोपाध्याय, विद्यावाचस्पति, परमागमविशारद, तत्त्ववेता, जैनरत्न, अध्यात्मशिरोमणि, वाणीविभूषण आदि अनेक उपाधियों से विभूषित किया गया है।

सरल, सुबोध, तर्कसंगत एवं आकर्षक शैली के प्रवचनकार डॉ. भारिल्ल आज सर्वाधिक लोकप्रिय आध्यात्मिक प्रवक्ता हैं। उन्हें सुनने देश-विदेश में हजारों श्रोता निरन्तर उत्सुक रहते हैं।

आध्यात्मिक जगत में ऐसा कोई घर न होगा, जहाँ प्रतिदिन आपके प्रवचनों के कैसेट न सुने जाते हों तथा आपका साहित्य अपलब्ध न हो। धर्मप्रचारार्थ आप 30 बार विदेश यात्रायें भी कर चुके हैं।

जैन जगत में सर्वाधिक पढ़े जाने वाले डॉ. भारिल्ल ने अब छोटी-बड़ी 81 पुस्तकें लिखी हैं और अनेक ग्रन्थों का सम्पादन किया है। आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि अब तक आठ भाषाओं में प्रकाशित आपकी कृतियाँ 45 लाख से भी अधिक की संख्या में जन-जन तक पहुँच चुकी हैं। ग्रंथाधिराज समयसार पर आपके नियमित प्रातः 6:30 से 7:00 तक जी-जागरण पर प्रवचन प्रसारित हो रहे हैं।

सर्वाधिक बिक्रीवाले जैन आध्यात्मिक मासिक 'वीतराग-विज्ञान' हिन्दी, मराठी तथा कन्नड़ के आप सम्पादक हैं। श्री टोडरमल स्मारक भवन की छत के नीचे चलने वाली विभिन्न संस्थाओं की समस्त गतिविधियों के संचालन में आपका महत्वपूर्ण योगदान है।

वर्तमान में आप श्री अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन विद्वत्परिषद् के अध्यक्ष, पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट जयपुर के महामन्त्री हैं। आप मंगलायतन विश्वविद्यालय में सर्वोच्य समिति (कोर्ट) के सदस्य एवं दर्शन विज्ञान संकाय के ऑनरेरी डीन हैं।

समाज की शीर्षस्थ संस्थाओं यथा-दिगम्बर जैन महासमिति, अ.भा. दिगम्बर जैन परिषद्, अ.भा. जैन पत्र सम्पादक संघ आदि से भी आप किसी न किसी रूप में जुड़े हैं।

भगवान महावीर और उनकी जन्मभूमि

डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

महावीर वन्दना

जो मोह माया मान मत्सर, मदन मर्दन वीर हैं।
जो विपुल विघ्नों बीच में भी, ध्यान धारण धीर हैं।।
जो तरण-तारण, भव-निवारण, भव जलधि के तीर हैं।
वे वंदनीय जिनेश, तीर्थंकर स्वयं महावीर हैं।।

जो राग-द्वेष विकार वर्जित, लीन आतम ध्यानमें।
जिनके विराट् विशाल निर्मल, अचल केवलज्ञान में।।
युगपद् विशद सकलार्थ झलकें, ध्वनित हो व्याख्यान में।
वे वर्द्धमान महान जिन, विचरें हमारे ध्यान में।।

जिनका परम पावन चरित, जलनिधि समान अपार है।
जिनके गुणों के कथन में, गणधर न पावें पार है।।
बस वीतराग-विज्ञान ही, जिनके कथन का सार है।
उन सर्वदर्शी सन्मती को, वंदना शत बार है।।

जिनके विमल उपदेश में सबके उदय की बात है।
समभाव समताभाव जिनका, जगत में विख्यात है।।
जिसने बताया जगत को, प्रत्येक कण स्वाधीन है।
कर्त्ता न धर्त्ता कोई है, अणु-अणु स्वयं में लीन है।।

आतम बने परमातमा, हो शान्ति सारे देश में।
है देशना सर्वोदयी, महावीर के सन्देश में।।

– डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

भगवान महावीर और उनकी जन्मभूमि

लेखक

डॉ. हुकमचंद भारिल्ल

शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., पीएच.डी., डी-लिट्
श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर-३०२०१५

प्रकाशक

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015
फोन : 0141-2707458, 2705581
E-mail : ptstjaipur@yahoo.com

प्रथम संस्करण : ३०००
(१३ मई २०१३)
अक्षय तृतीया
महावीर जयन्ती स्मारिका : १०००
वीतराग-विज्ञान (हिन्दी) : ७१००
(मराठी) : २१००
(कन्नड़) : १०००
गुरु प्रसाद (गुजराती) : ३०००
कुल योग : १७२००

मूल्य : ३ रुपये

मुद्रक : श्री प्रिंटर्स
मालवीय नगर
जयपुर

प्रकाशकीय

तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल की नवीनतम कृति **भगवान महावीर और उनकी जन्मभूमि** का प्रकाशन करते हुए हमें हार्दिक प्रसन्नता हो रही है।

यह एक सर्वमान्य तथ्य है कि भगवान महावीर का जन्म वैशाली गणराज्य के कुण्डपुर में हुआ था, जिसे कुण्डलपुर भी कहा जाता है, परन्तु कतिपय लोगों द्वारा भगवान महावीर की जन्मभूमि को विवादास्पद बनाने का प्रयास किया जा रहा है।

डॉ. भारिल्ल ने इस कृति के माध्यम से यह सिद्ध करने का सफल प्रयास किया है कि भगवान महावीर की वास्तविक जन्मभूमि वैशाली स्थित कुण्डपुर ही है।

पुस्तक के अन्त में स्थानीय लोकगीतों को भी प्रकाशित किया गया है, जो जन्मभूमि की वास्तविकता सिद्ध करने के लिए सशक्त प्रमाण हैं।

आशा है इस पुस्तक के माध्यम से भगवान की जन्मभूमि संबंधी भ्रम समाप्त होंगे।

हम इस पुस्तक को अनेक भाषाओं में प्रकाशित कर लाखों की संख्या में जन-जन तक पहुँचाने के लिए कृत संकल्प हैं।

जो भी भगवान महावीर में श्रद्धा रखने वाले भाई-बहिन इस कृति को अपने क्षेत्र में वितरित करना चाहते हैं; उन्हें हम यह कृति लागत मूल्य से भी कम मूल्य में १५ दिन के भीतर उपलब्ध करायेंगे।

उसके नाम की पर्ची लगाने की व्यवस्था भी हम अपने खर्चे से करेंगे।

- ब्र. यशपाल जैन
प्रकाशनमंत्री, पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर

भगवान महावीर और उनकी जन्मभूमि

भगवान महावीर के विहार के कारण विशाल भारतभूमि के जिस प्रदेश का नाम 'बिहार' पड़ा; वह प्रदेश आज से ढाई हजार वर्ष पहले राजनीति और धर्मक्षेत्र का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण केन्द्र रहा है।

सर्वाधिक प्राचीन प्रजातंत्र अपनी पूरी प्रतिष्ठा के साथ भारतवर्ष के इसी भूभाग में पल्लवित हुआ, प्रतिष्ठित हुआ और युगों-युगों तक अपनी आभा बिखेरता रहा है।

उक्त संदर्भ में बिहार के प्रथम मुख्यमंत्री (१९४७) डॉ. श्रीकृष्णसिंह के निम्नांकित विचार दृष्टव्य हैं –

"जान-बूझ कर पश्चिमवालों ने हमारे प्राचीन इतिहास को इस तरह रखा है, जिसमें हमें मालूम पड़े कि हम बराबर निरंकुशतापूर्वक शासित होते आये हैं और हमारे यहाँ प्रजातंत्र की कोई परम्परा नहीं है। अब पश्चिम देख ले और अपना अज्ञान दूर कर ले कि **जिस समय उसके पूर्वपुरुष जंगलों में घूमते थे, उस समय प्राचीन भारत में प्रजातंत्रवाद अपने पूरे गौरव के साथ फल-फूल रहा था।**

आज इस बात की बड़ी जरूरत है कि हमारा इतिहास फिर से लिखा जाये और उसमें से गलत बातों को हटा दिया जाये। हमें अपने देशवासियों को इस ढंग से शिक्षित करना है कि वे न केवल अपने देश का सिर ऊँचा करें, बल्कि विदेशों में भी अपने देश का गौरव बढायें।[१]"

सर्वाधिक प्राचीन भारतीय प्रजातंत्र की राजधानी वैशाली थी। वैशाली के संबंध में बिहार विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के रीडर डॉ. सुरेन्द्रनाथ दीक्षित लिखते हैं –

"वैशाली का महत्त्व भारत के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में उल्लेखनीय है। **यहाँ गणतंत्रीय शासन-प्रणाली ईसवीपूर्व सातवीं सदी में फल-फूल रही थी,** जब

१. वैशाली अभिनंदन ग्रंथ, प्राचीन वैशाली के आदर्श, डॉ. श्रीकृष्ण सिंह, एम.ए., बी.एल. (प्रधानमंत्री, बिहार), पृष्ठ ३१

विश्व के शेष भागों में सभ्यता और संस्कृति ने आँखें भी नहीं खोली थीं।[1]

बौद्ध एवं जैन साहित्य में इस गणराज्य की महिमा का उल्लेख बहुत विस्तार से किया गया है। उनके अनुसार शासन-संचालन के लिए एक केन्द्रीय कार्यपालिका होती थी, जिसके सदस्य राजा, उपराज, सेनापति और भाण्डागारिक होते थे। नौ गणराजाओं की समिति विदेश-विभाग के काम की देखभाल करती थी।

केन्द्रीय विधान सभा ''संस्था'' के नाम से संबोधित होती थी। जहाँ इसका आयोजन होता था उसे ''संस्थागार'' कहा जाता था। इसके सदस्यों की संख्या ७७०७ होती थी। इन सदस्यों को ''अभिषेक मंगल पुष्करिणी'' में स्नान कराके अभिषिक्त किया जाता था।

संघ की कार्यपालिका के अतिरिक्त एक सुसंगठित न्यायपालिका भी थी। वृजि संघ की न्यायपालिका के अनेक स्तर थे, जिनमें ''अष्टकुलक'' सर्वोच्च था, जहाँ दण्डित अपराधी की अपील की सुनवाई भी होती थी। राजा (उपराष्ट्रपति) न्यायपालिका का सर्वोच्च अधिकारी होता था।

वृजिसंघ की गणतंत्रात्मक व्यवस्था के आधार पर ही शास्ता गौतम बुद्ध ने अपने संघ के नियमों के निर्धारण और संगठन का सूत्रपात किया। बौद्धसंघ की सारी कार्यप्रणाली, गणतंत्रात्मक होने के कारण, आदिम समतामूलक साम्यवादी चेतना से अनुप्राणित मालूम पड़ती है।

वृजिसंघ की राजधानी वैशाली थी। उस युग में वैशाली अपने अपार वैभव, कला-प्रेम और सौन्दर्यप्रियता के लिए जगदविख्यात थी।[2]

राजधानी वैशाली तो सदियों तक अमित महिमा और ऐश्वर्य का केन्द्र ही नहीं बनी रही, अपितु समस्त भारत में धर्म, संस्कृति, इतिहास और राजनीति के क्षेत्र में जो व्यापक क्रान्तियाँ हुईं, उनमें उसकी भूमिका अत्यन्त महत्त्व की रही है।

वैशाली को यह सौभाग्य प्राप्त है कि यह भारत एवं विश्व के दो महान् धर्म-प्रवर्तकों – महावीर वर्द्धमान और गौतम बुद्ध – की जन्मभूमि और प्रमुख कर्मभूमि रही है। महावीर वर्द्धमान का जन्म वैशाली के नितान्त निकटवर्ती बासु

१. वैशाली अभिनंदन ग्रंथ, वैशाली की गरिमा, डॉ. सुरेन्द्रनाथ दीक्षित, पृष्ठ ३९७
२. वही, पृष्ठ ३९८

कुण्ड में लगभग ५३१ ईसा-पूर्व में हुआ। वे जैनधर्म के अन्तिम एवं चौबीसवें तीर्थंकर थे।[1]''

इतिहासरत्न डॉ. योगेन्द्र मिश्र प्रोफेसर एवं अध्यक्ष : इतिहास विभाग, पटना विश्वविद्यालय लिखते हैं –

''वैशाली गणतंत्र की जननी है। यहाँ गणतंत्र की स्थापना उस समय हो चुकी थी, जिस समय यूनान में इसका स्थापित होना बाकी था। अतएव हमें यह मानने में किसी तरह का संकोच या हीला-हवाला नहीं होना चाहिए कि वैशाली गणतंत्र की माता है।[2]''

वैशाली के संबंध में महाकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' लिखते हैं –

''वैशाली ! जन का प्रतिपालक, गण का आदि विधाता !
जिसे ढूँढता देश आज उस प्रजातंत्र की माता
रुको एक क्षण पथिक ! यहाँ मिट्टी को शीश नवाओ
राजसिद्धियों की समाधि पर फूल चढाते जाओ[3]''

आल इण्डिया रेडियो की पटना शाखा से प्रसारित जगदीश चन्द्र माथुर आई.सी.एस. के एकांकी का अंश भी वैशाली को प्रजातंत्र की माता घोषित कर रहा है; जो इसप्रकार है –

''वैशाली ! इतिहास-पृष्ठ पर अंकन अंगारों का,
वैशाली ! अतीत-गह्वर में गुंजन तलवारों का,
वैशाली ! जन का प्रतिपालक, गण का आदि विधाता,
जिसे ढूँढता देश आज, उस प्रजातंत्र की माता।[4]''

भारतवर्ष के प्रथम राष्ट्रपति (१९५६) डॉ. राजेन्द्रप्रसादजी वैशाली के संबंध में विचार व्यक्त करते हुए लिखते हैं –

१. वैशाली अभिनंदन ग्रंथ, वैशाली की गरिमा, डॉ. सुरेन्द्रनाथ दीक्षित, पृष्ठ ३९८
२. वैशाली अभिनंदन ग्रंथ, वैशाली के लिच्छवि-गणराज्य का पुनरुत्थान, डॉ. योगेन्द्र मिश्र, पृष्ठ ४६२
३. वैशाली अभिनंदन ग्रंथ, वैशाली, रामधारी सिंह 'दिनकर', पृष्ठ २९९
४. वैशाली अभिनंदन ग्रंथ, वैशाली-दिग्दर्शन, जगदीशचन्द्र माथुर, पृष्ठ २९०

"हमारे गौरवमय अतीत से संबंधित जितने भी प्रमुख स्थल बिहार में हैं, वैशाली निस्सन्देह उनमें से एक है। यह नगरी लिच्छिवियों और वृज्जियों के गणराज्य की राजधानी थी। प्राचीनकाल में गणराज्य अथवा प्रजातंत्र का यह स्थान प्रसिद्ध केन्द्र था। एक समय था जब इस भूमि में किसी राजा का शासन नहीं था, जनता के सात हजार से अधिक प्रतिनिधि सारा राज-काज चलाते थे और न्याय का विधान इतना सुन्दर था कि स्वयं भगवान बुद्ध ने अपने मुख से उसकी प्रशंसा की थी। निश्चय ही लोकशासन की सारी चेतना वहाँ मूर्तरूप से देखी जाती थी।

वैशाली, जो भगवान महावीर की जन्मभूमि थी और सदियों तक उनके मतावलम्बियों तथा अनुयायियों की धार्मिक और साहित्यिक गतिविधियों का केन्द्र रही, आज जीर्ण-शीर्ण अवस्था में हमारे सामने है।[१]

भगवान महावीर के जीवन से एक और तत्त्व हमें ग्रहण करना चाहिए, वह है उनकी समन्वय दृष्टि। अपने विचारों को उदार रख दूसरों को सहानुभूतिपूर्वक उनकी दृष्टि से समझने की क्षमता और अपने में मिलाने की शक्ति ही समन्वय दृष्टि है। महावीर की समन्वयात्मक दृष्टि भारतीय धर्म तथा दर्शनशास्त्र के लिए बहुत बड़ी देन है। इस सिद्धान्त की गहराई और इसके उच्च व्यावहारिक पहलू को हम महावीर के जीवन से ही समझ सकते हैं।[२]"

कहा जाता है कि 'वैशाली' – यह नाम इसलिए पड़ा कि जनसंख्या की वृद्धि के कारण नगर के कोट को कई बार हटाकर विशाल किया गया। यह वैशाली बहुत मनुष्यों से भरी हुई, अन्न-पान से सम्पन्न और अत्यन्त समृद्धशाली थी।

इसमें ७७७७ प्रासाद, ७७७७ कूटागार (कोठे), ७७७७ आराम (उद्यान) और ७७७७ पुष्करिणियाँ थीं। जैनग्रंथों से यह भी पता चलता है कि वैशाली के क्षत्रिय, ब्राह्मण और वणिक अलग-अलग उपनगरों में रहते थे।

काशी विश्वविद्यालय के प्रोफेसर डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल लिखते हैं –

"लिच्छवियों के ७७०७ कुल थे। प्रत्येक कुल का कुलवृद्ध या प्रतिनिधि 'राजा' की पदवी धारण करता था। प्रत्येक 'राजा' या कुल के प्रतिनिधि क्षत्रिय

१. वैशाली अभिनंदन ग्रंथ, प्राकृत साहित्य और वैशाली, राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, पृष्ठ १०४
२. वही, पृष्ठ १०५

को गण के ऐश्वर्य या प्रभुसत्ता में समान अधिकार प्राप्त था।

लिच्छवियों के वैशाली नगर में गण के अंतर्गत राजाओं के जितने कुल थे, उनके राज्याधिकार पर अभिषेक करने का जल एक विशेष पुष्करिणी या कुण्ड से लिया जाता था, जिसे मंगलपुष्करिणी कहते थे।[१] गण की सभा में वे ही बैठ सकते थे, जो विधिवत् मूर्धाभिषिक्त होते थे।

प्रत्येक कुल का बड़ा बूढा या कुलवृद्ध उसका प्रतिनिधि होता था। कुलवृद्ध पिता के अनन्तर उसका पुत्र इस पदवी का अधिकारी बनता था। उस अवसर पर उसका मूर्धाभिषेक समस्त समाज की उपस्थिति में समारोह पूर्वक किया जाता था। आजकल की भाषा में इस लोकप्रथा को 'पगड़ी बाँधना' कहते हैं। समस्त कुल एक दूसरे की तुलना में समानाधिकार रखते थे। सब मूर्धाभिषिक्त क्षत्रिय जन्म और कुल इन दोनों बातों में सर्वथा समान थे। कोई किसी तरह की विशिष्टता का दावा न कर सकता था। लिच्छवि संघ या वृज्जि जनपद में जो चिरन्तन परम्पराएँ पोषित हुई थीं, उनके अनुसार जातीय स्वाभिमान समत्वभाव, वैयक्तिक गरिमा और स्वातंत्र्य भावनाओं की प्रधानता थी – ऐसा बौद्ध साहित्य से विदित होता है। कहा जाता है कि यहाँ के क्षत्रिय कुमार एक से रथों पर एक समान वेश पहन कर एक से अनुभाव से निकलते थे।[२]

तीन बातें विशेष रूप से प्रकट हुईं – एक आर्थिक समृद्धि, दूसरे नैतिक गुणों का विकास और तीसरे प्रज्ञा या बुद्धि के आकस्मिक स्फोट द्वारा साहित्य और ज्ञान का चरम उत्कर्ष।[३]"

वैशाली की शासन-व्यवस्था के संबंध में महापण्डित राहुल सांकृत्यायन लिखते हैं–

"गणों की सर्वोपरि शासन-सभा या पार्लियामेंट को संस्था कहा जाता था और जहाँ संस्था की बैठक हुआ करती, उसे संस्थागार (संथागार) कहा जाता। वैशाली के भीतर संस्थागार की एक बड़ी शाला थी, जिसमें गणतंत्र के सदस्य

१. वैशाली अभिनंदन ग्रंथ, वैशाली और दीर्घप्रज्ञ भगवान महावीर, डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल, पृष्ठ ११३
२. वही, पृष्ठ ११३
३. वही. पृष्ठ ११४

इकट्ठा होकर राजकाज और विधान की बातों का निर्णय किया करते थे। संस्थागार की बैठकों में शासकीय कार्य के समाप्त हो जाने पर लोग दूसरी सामाजिक आदि चर्चाओं में लग सकते थे। संस्थागार में कभी-कभी अतिथियों को भी ठहराया जाता था।[१]''

वैशाली के प्रजातंत्र और न्यायव्यवस्था के संबंध में डॉ. कैलाशनाथ काटजू, भूतपूर्व गृहमंत्री, भारत सरकार (१९५४) लिखते हैं –

''प्राचीन वैशाली में एक अद्‌भुत सामाजिक-राजनीतिक प्रणाली का विकास हुआ था, जिसमें जनता के सात हजार सात सौ सात प्रतिनिधि शासन करते थे। गौतम बुद्ध ने अपने (बौद्ध) संघ की शासन-प्रणाली लिच्छिवियों, मंत्रों और शास्त्रों की राजनीतिक पद्धति से ही ली थी। उस दृश्य का अंदाज कीजिए जब इस भूमि पर जनता के प्रतिनिधि बैठकर शासन-संबंधी निर्णय करते थे, जबकि इसके इर्द-गिर्द राजतंत्र का बोलबाला था। लिच्छिवियों की न्याय-प्रणाली खास तौर से जिक्र करने लायक है। जब तक अपराध साबित न होता था, तबतक लोगों को सजा न हो सकती थी। इसके लिए उन्हें कई अवस्थाओं से गुजरना पड़ता था। अन्त में जब अपराध साबित हो जाता और अपील के लिए कोई उच्चतर सत्ता न बचती तब दंड-विधान देखकर सजा दी जाती थी।

इसप्रकार की न्याय-प्रणाली हम भी अपना सकते हैं। हाँ, यह दूसरी बात है कि समय बदलने के कारण उसमें उपयुक्त परिवर्तन करना पड़ जायेगा।[२]''

वैशाली के संदर्भ में बिहार के राज्यपाल (१९५६) श्री रंगनाथ रामचन्द्र दिवाकर लिखते हैं –

''आज से लगभग ढाई हजार वर्ष पूर्व, इसी पवित्र भूमि पर, जहाँ अभी हम लोग एकत्रित हुए हैं, कभी उस महापुरुष का आविर्भाव हुआ था, जिसने सिर्फ मानव समाज में ही नहीं, वरन् सृष्टि के समस्त जीवधारियों में, शांति, समता, सहृदयता और सह-अस्तित्व की स्थापना के लिए अपने समस्त राजसी सुखों को लात मार कर संन्यास लिया था। कल्पना कीजिए, उस समय की, जब ३०

१. वैशाली अभिनंदन ग्रंथ, वैशाली का प्रजातंत्र, महापण्डित राहुल सांकृत्यायन, पृष्ठ ४३
२. वैशाली अभिनंदन ग्रंथ, प्राचीन वैशाली की स्मृति, डॉ. कैलाशनाथ काटजू, पृष्ठ ९६

वर्ष के राजकुमार ने लोककल्याण की मंगल-कामना से अभिभूत होकर प्रव्रज्या ग्रहण करने की अनुमति देने के लिए आग्रह किया होगा और जरा उस स्थिति पर भी विचार कीजिए जब दिन के तीसरे पहर, यहीं के ज्ञातृ खण्ड वन में, उस समय, जब समस्त वैशाली के नगर निवासी, बाल, वृद्ध, युवा, स्त्री, पुरुष, सभी उपस्थित होंगे, उसने प्रव्रज्या ग्रहण की होंगी।

आत्मोत्सर्ग का यह महान आदर्श निरूपित करनेवाले, महापुरुष, जिस मिट्टी में पैदा हों, सचमुच वह धरती धन्य है और धन्य हैं वहाँ के रहनेवाले वे लोग।

वैशाली, इस नाम में ही जादू का असर है। यह स्थान मुजफ्फरपुर से लगभग तेईस मील की दूरी पर अवस्थित है। छठी शताब्दी ई.पू. में ही यह वज्जियों का गणतंत्र-संघ से संबंधित था। वज्जि संघ की यही राजधानी थी। साथ ही, वज्जि संघ के आठ गणंतत्रों में से सर्वाधिक शक्तिशाली लिच्छिवियों की राजधानी भी यही थी। सभी गणतंत्रों का संचालन बहुत ही व्यवस्थित एवं उत्कृष्ट ढंग से होता था।

कहा जाता है कि भगवान बुद्ध ने बुद्धधर्म को संघटित करते समय वज्जियों की गणतंत्र-प्रणाली की बहुत-सी बातों को हू-ब-हू स्वीकार कर लिया था।[१]''

वैशाली और भगवान महावीर के संबंध में षटखण्डागम का संपादन करने वाले प्राकृतभाषा और जैनदर्शन के प्रकाण्ड विद्वान डॉ. हीरालाल जैन लिखते हैं–

''वहाँ उस समय एक वैभवशाली राजधानी थी और उसी का नाम वैशाली था। वैशाली का एक भाग कुंडपुर या क्षत्रियकुण्ड कहलाता था, जहाँ एक राजभवन में राजा सिद्धार्थ अपनी रानी त्रिशला के साथ धर्म और न्यायपूर्वक शासन करते हुए सुख से रहते थे। रानी त्रिशला की कुक्षि से एक बालक का जन्म हुआ और राजकुमार के अनुरूप उसका पालन-पोषण और शिक्षण हुआ। इसी राजकुमार की उत्तरोत्तर बढ़ती हुई वृद्धि और प्रतिभा तथा उन्नतिशील शरीर को देखकर उसका नाम वर्द्धमान महावीर रखा गया।

स्वभावत: यह आशा की जाती थी कि राजकुमार महावीर भी यथासमय

१. वैशाली अभिनंदन ग्रंथ, वैशाली का सांस्कृतिक महत्त्व, श्री रंगनाथ रामचन्द्र दिवाकर, राज्यपाल, बिहार, पृष्ठ ११६

राज्य की विभूति का सुख भोग करेंगे; किन्तु ऐसा नहीं हुआ। लगभग तीस वर्षों की युवावस्था में उन्हें राजभवन के जीवन से विरक्ति हो गयी और वे आत्मकल्याण तथा लोकोपकार की भावना से प्रेरित होकर राजधानी को छोड़ वन को चले गये।

उन्होंने भोगोपभोग और साज-सजावट की समस्त सामग्री का परित्याग तो किया ही, किन्तु लेशमात्र भी परिग्रह रखना उन्होंने अपनी शान्ति और आत्मशुद्धि का बाधक समझा। इसलिए उन्होंने वस्त्र का भी परित्याग कर दिया और वे 'निर्ग्रंथ' या 'अचेल' हो गये। इसप्रकार बारह वर्षों तक कठोर तपस्या करने के पश्चात् उन्हें सच्चा, शुद्ध और संपूर्ण ज्ञान प्राप्त हुआ, जिसके कारण वे 'सर्वज्ञ' और 'केवली' कहलाने लगे।

उस समय मगध देश की राजधानी राजगृह (आधुनिक राजगीर) थी और यहाँ सम्राट श्रेणिक बिंबिसार राज्य करते थे। भगवान महावीर विहार करते हुए राजगृह पहुँचे और विपुलाचल नामक पहाड़ी पर उनका सर्वप्रथम प्रवचन हुआ। उनके उपदेशों को हजारों की संख्या में जनता ने बड़े चाव से सुना और ग्रहण किया। फिर कोई तीस वर्षों तक भगवान महावीर देश के भिन्न-भिन्न भागों में विहार करते रहे और इसीलिए इस प्रदेश का नाम 'बिहार' प्रसिद्ध हुआ।[१]

विहार करते हुए भगवान पावापुरी पहुँचे और वहाँ करीब बहत्तर वर्षों की अवस्था में उनका निर्वाण हो गया।[२]''

उक्त सभी ऐतिहासिक प्रमाणों के आधार पर यह बात ताल ठोक कर कही जा सकती है कि तीर्थंकर भगवान महावीर का जन्म वासुकुण्ड या कुण्डपुर वैशाली में ही हुआ था। इस वासुकुण्ड या कुण्डपुर को क्षत्रियकुण्ड भी कहा जाता है। यह क्षत्रियकुण्ड भी कोई छोटी-मोटी जगह नहीं थी। इसे ही हम आजकल कुण्डलपुर कहने लगे हैं।

इस विशाल वैशाली गणराज्य के अध्यक्ष तीर्थंकर भगवान महावीर के नाना महाराज चेटक थे और क्षत्रियकुण्ड के राजा सिद्धार्थ तीर्थंकर महावीर के पिता थे। तीर्थंकर महावीर की माता प्रियकारिणी त्रिशला महाराजा चेटक की

१. वैशाली अभिनंदन ग्रंथ, भगवान महावीर और उनका लोककल्याणकारी संदेश, डॉ. हीरालाल जैन, पृष्ठ ९८
२. वही, पृष्ठ ९८

सबसे बड़ी पुत्री थीं।

तीर्थंकर भगवान महावीर के जीवन-चरित्र से हम सभी भलीभाँति परिचित हैं। मैंने भी तीर्थंकर भगवान महावीर के संबंध में तीन पुस्तकें लिखी हैं; जो लाखों की संख्या में आप लोगों के हाथों में पहुँच चुकी हैं। वे आज भी हमारे यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में सभी को सहज ही उपलब्ध हैं; जिनके नाम 'तीर्थंकर महावीर और उनका सर्वोदय तीर्थ', 'तीर्थंकर भगवान महावीर' और 'वीतरागी व्यक्तित्व : भगवान महावीर' हैं।

आज हमें उनके जीवन या सिद्धान्तों की चर्चा नहीं करनी है, आज तो उनकी जन्मभूमि के बारे में चर्चा करना चाहते हैं।

जिनका शासन अभी चल रहा है, उन तीर्थंकर भगवान महावीर की मूल जन्मभूमि वैशाली को आज हम भूल से गये हैं।

हमारी इस उपेक्षा पर अत्यन्त खेद व्यक्त करते हुए प्रसिद्ध बौद्ध विद्वान महापण्डित राहुल सांकृत्यायन लिखते हैं –

''यह कम आश्चर्य की बात नहीं है कि जैनों ने अपने तीर्थंकर की जन्मभूमि का नाम तक भुला दिया। ऐसा क्यों हुआ ? इसके लिए दो चार शताब्दियाँ ऐसी होनी चाहिए, जबकि वज्जी भूमि और वैशाली से जैनों का कोई सम्पर्क नहीं रह गया था। अस्तु।[१]''

इसप्रकार हमने महावीर की जन्मभूमि के नाम पर नये तीर्थ विकसित कर लिये। भगवान महावीर की असली जन्मभूमि की किसी ने कोई सुधि नहीं ली। आज जब देशी-विदेशी अनेक अजैन विद्वानों ने यह सिद्ध कर दिया कि भगवान महावीर की असली जन्मभूमि वैशाली है, वैशाली जनपद के अंतर्गत वैशाली के अत्यन्त निकटवर्ती क्षेत्र वासुकुण्ड या कुण्डग्राम है; तब भी हमारे कुछ साथी, साधर्मी भाई उक्त तथ्य को नकारने का असफल प्रयास कर रहे हैं। आज हम उन लोगों में शामिल हो गये हैं कि जो न तो स्वयं जानते हैं और न जाननेवालों की मानते ही हैं।

वैशाली क्षेत्र से विधायक रहे नागेन्द्रप्रसाद सिंह लिखते हैं –

१. वैशाली अभिनंदन ग्रंथ, वैशाली का प्रजातंत्र, महापण्डित राहुल सांकृत्यायन, पृष्ठ ४८

"सन् १९४३ ई. तक वैशाली का नाम लोगों को मालूम न था। लोग इसे बसाढ अथवा बनिया-बसाढ के नाम से जानते थे। विद्वानों अथवा अधिक पढे-लिखे लोगों को इसकी महत्ता का पता था, किन्तु सामान्य जनता इससे पूर्णतया अपरिचित थी। उसकी दृष्टि में अशोक का स्तम्भ 'भीमसेन की लाठी' बन गया था और उसके पश्चिम के सटे-सटे स्थित दोनों स्तूप 'भीमसेन का भार' या 'भीमसेन का पल्ला' बनकर रह गये थे। सारा इलाका उपेक्षित था और अन्य गाँवों या इलाकों के समान वीरान, निस्पंद और निष्क्रिय था।

सन् १९४२ के 'भारत छोड़ो' आंदोलन के ब्रिटिश साम्राज्यवादियों द्वारा कुचल दिये जाने और दमनचक्र के चालू रहने के कारण सर्वत्र मुर्दनी छायी हुई थी।

इसी परिस्थिति में सन् १९४४ ई. के उत्तरार्द्ध में श्री जगदीशचन्द्र माथुर, आई.सी.एस. (इण्डियन सिविल सर्विस) के सदस्य के रूप में, हाजीपुर के एस.डी.ओ. (सब डिविजनल अफसर, अवर अनुमण्डल-पदाधिकारी) बनकर आये। वे वैशाली के गौरव से परिचित थे, किन्तु उस इलाके की दुरवस्था देख उन्हें घोर निराशा हुई। उन्होंने इस संबंध में कुछ करने का निश्चय किया, जिसका परिणाम हुआ वार्षिक वैशाली-महोत्सव और वैशाली-संघ नामक संघटन। आगे चलकर मुख्यतया इन्हीं दोनों संस्थाओं के माध्यम से वैशाली का विकास होने लगा।[१]

यह महोत्सव अब भी होता है, जो वैशाली की दिव्य विभूति चौबीसवें तीर्थंकर भगवान महावीर के जन्मदिन (चेत सुदी १३) को मनाया जाता है। प्रात:काल वीना पोखर (बसाढ) के जैन मंदिर पर तीर्थंकर भगवान की पूजा होती है। उसके बाद बसुकुण्ड स्थित प्राकृत विद्यापीठ में उसकी अधिष्ठात्री परिषद् (जनरल कौंसिल) की वार्षिक सभा होती है, जिसकी अध्यक्षता बिहार के राज्यपाल करते हैं। फिर उन्हीं की अध्यक्षता में विद्यापीठ के तत्त्वावधान में पूर्व घोषित विषय पर विद्वत्-संगोष्ठी होती है।[२]

पुरातत्त्व-संबंधी खुदाइयों का सिलसिला पुन: चालू हुआ; एक स्थानीय

१. वैशाली अभिनंदन ग्रंथ, विकासोन्मुख वैशाली, नागेन्द्र प्रसाद सिंह, पृष्ठ ४६९
२. वही, पृष्ठ ४७०

पुरातत्त्व संग्रहालय की स्थापना हुई (जो भारत में पहला ग्रामीण संग्रहालय था); जैन समुदाय द्वारा वैशाली के भगवान महावीर का जन्मस्थान होने की मान्यता प्राप्त की गयी; प्राकृत और जैन संस्कृति के अध्ययन के लिए एक प्रतिष्ठान स्थापित किया गया; स्थानीय जनता के लिए विद्यालयों इत्यादि की स्थापना हुई; अनेक अनुसंधानपूर्ण और लोकप्रिय प्रकाशन प्रस्तुत किये गये।[१]"

वैशाली के लोकमानस में तीर्थंकर भगवान महावीर की गंध आज भी विद्यमान है। उक्त संदर्भ में सर्वेक्षण कर विशेष अध्ययन करनेवाले डॉ. राजेन्द्रकुमार बंसल लिखते हैं – "भगवान महावीर के क्षत्रिय वंशजों के पूजागृह में गृहदेवता सोखा (सिद्ध) बाबा का चिह्न है और बाहर के आले में महावीर बाबा का चिह्न है, जो त्रिकोणरूप मिट्टी से बना है। चिह्नों के सामने प्रतिदिन शाम को दीपक जलाकर पूजा की जाती है। इनके समक्ष कुल गीत भी गाये जाते हैं।

वे घरों में ताले नहीं लगाते और प्याज आदि जमींकंद नहीं खाते। शादी-विवाह और यज्ञोपवीत रस्म के समय 'बिलौकी' की रस्म होती है।

इसमें द्वाराचार के बाद वर को पालकी में गाजे-बाजे के साथ अहल्यभूमि ले जाते हैं। वहाँ भगवान महावीर की पूजा-अर्चना की जाती है। मंगल की कामना की जाती है।

शादी के समय निम्न गीत गाकर महावीर की पूजन की जाती है –

ऊपर सोखा बाबा के मंदिर बने हैं, नीचे खड़े परिवार हैं
पूजब हम सोखा बाबा के।
ऊपर महावीर बाबा के मंदिर बने हैं, नीचे खड़े परिवार हैं
पूजब हम महावीर बाबा के।
कहाँ गेलिन किये भेलिन, गाँव मलिनिया फूलवा लेइ है।
पिलवा रंग है, महावीर पूजन है।

अर्थ – ऊपर सिद्ध (सोखा) बाबा के मंदिर हैं, नीचे परिवार के सभी सदस्य खड़े होकर उनकी पूजन करते हैं। ऊपर महावीर बाबा के मंदिर बने हैं। नीचे परिवार के सदस्य खड़े होकर पूजन करते हैं।

१. वैशाली अभिनंदन ग्रंथ, विकासोन्मुख वैशाली, नागेन्द्र प्रसाद सिंह, पृष्ठ ४७०

गाँव की मालिन पीले रंग के फूल लेकर किस गली में भूल गयी, हम महावीर की पूजा करते हैं।

शादी के समय सोखा बाबा और महावीर को न्यौते का गीत इस प्रकार है –

पहला नेवता हम सोखन बाबा के भेजली
आबन के जग देखन के,
अपने हाथ जग सम्हालन के।
दूसरा नेवता हम महावीर बाबा के भेजली
आवन के जग देखन के,
जग अपने हाथ सम्हालन के।

अर्थ – शादी के समय हम पहला निमंत्रण–न्यौता सोखा (सिद्ध भगवान) बाबा को दे रहे हैं। वे सबको जानने–देखनेवाले भगवान आवें और हम सबकी रक्षा करें।

दूसरा निमंत्रण महावीर बाबा को भेज रहे हैं। वे सबको देखने–जाननेवाले भगवान आवें और हम सबकी संभाल करें।

वासोकुण्ड–वैशाली के जनमानस के रीति–रिवाज, शादी–विवाह एवं लोकगीतों में भगवान महावीर का पुण्य स्मरण और उनके सिद्धान्तों का जीवन में पालन करना, महावीर के अमिट प्रभाव की पुष्टि करता है, जो अद्वितीय अद्‌भुत है। इससे यह सिद्ध होता है कि वासोकुण्ड ही महावीर की जन्मस्थली है।[१]''

तीर्थंकर महावीर का जन्म वासोकुण्ड (वैशाली) में ही हुआ था। इस बात की पुष्टि निम्नांकित लोकगीत से भी होती है –

''आहे कौना नगररिया भइया,
महावीर जनम लिहले किये हइन माताजी के नाम है ?
वासोकुण्ड नगरिया में महावीर जनम भइले
त्रिशला देवी माताजी के नाम हैं।
चइत महिना रामा तेरस इजोरिया में
हो खेलो जय–जयकार है।

१. वैशाली के गणनायक महावीर, पृष्ठ ४८–४९

सोना जे बरसे रामा, हीरा जे बरसेला
मोती बरसे बौछार है।
अइसन समइया रामा, महावीर जनम भइले
नगर में होइवे जयकार है।

अर्थ – भैया यह कौन सा नगर है ? क्या महावीर ने यहाँ जनम लिया है ? उनकी माताजी का क्या नाम है ?

वासोकुण्ड नगर में महावीर ने जन्म लिया है, उनकी माताजी का नाम त्रिशला देवी है। हे राम, चैत्रमास की तेरस शुक्लपक्ष (इजोरिया) में उनका जन्म हुआ था। सभी ने प्रसन्नतापूर्वक जय–जयकार की थी। उस समय बौछार रूप से सोना, हीरा, मोती आदि की बरसात हुई। ऐसे समय (रत्नवर्षा सहित), हे राम, महावीर ने जन्म लिया था और नगर में उनकी जय–जयकार हुई थी।[१]''

भूली–बिसरी प्रजातंत्र की माता वैशाली की याद हमें अब आजाद भारत में आई है; वह भी तब जब हमें जैनेतर मनीषियों ने जगाया है।

विगत अनेक दशाब्दियों से महावीर जयन्ती के अवसर पर वैशाली में सरकार के सहयोग से विशाल स्तर पर वैशाली महोत्सव मनाया जा रहा है। उक्त अवसर पर अनेकानेक प्रभावशाली नेतागण भी आते रहे हैं और देश व समाज को जागृत करते रहे हैं।

साहू शान्ति प्रसादजी ने वहाँ प्राकृत विद्यापीठ की भी स्थापना की है, शोध संस्थान आरंभ किया है; तथापि हमारी नींद अभी तक नहीं टूटी है।

समाज का जैसा सहयोग प्राप्त होना चाहिए था, वह अभी तक प्राप्त नहीं हो सका है। न तो एक दर्शनीय विशाल जिनमंदिर ही बन पाया है और न वह तीर्थस्थान हमारी यात्रा में शामिल हो सका है।

आचार्य श्री विद्यानन्दजी के प्रयास से, प्रभाव से इस दिशा में कुछ कदम उठाये जा रहे हैं, मंदिर का निर्माण आरंभ हो गया है और अनेक कार्य हो रहे हैं; पर समाज का जैसा सक्रिय सहयोग प्राप्त होना चाहिए, प्राप्त नहीं हो पा रहा है।

१. वैशाली के गणनायक महावीर, पृष्ठ ४७

मुमुक्षु समाज भी निष्क्रिय है। यद्यपि मुमुक्षु समाज; जैन समाज, विशेष कर दिगम्बर जैन समाज के प्रत्येक सामाजिक काम में सदा शामिल रहा है, सक्रिय सहयोग देता रहा है; तथापि इस दिशा में अभी उसकी अपेक्षित भागीदारी दिखाई नहीं देती। सम्पूर्ण जैन समाज के साथ उसे भी इस दिशा में विशेष सक्रिय होने की आवश्यकता है।

यद्यपि वैशाली में मंदिर अभी बन ही रहा है; तथापि हमने श्री टोडरमल स्मारक भवन में स्थित जिनालय में वैशाली में बननेवाले मंदिर के मॉडल (अनुकृति) को संगमरमर के पाटिये पर उत्कीर्ण कराके मुख्य स्थान पर स्थापित कर दिया है।

विशेष ध्यान देने की बात तो यह है कि जब हम पूर्वी भारत के तीर्थक्षेत्रों की यात्रा करने जाते हैं तो उस समय वैशाली को हमारी तीर्थ यात्रा का अंग अवश्य बनाया जाना चाहिए; क्योंकि जबतक हम उस परम पावन भूमि का स्पर्श नहीं करेंगे, उसका अवलोकन नहीं करेंगे, उसके विकास में सहयोग नहीं करेंगे, उसे एक अच्छे पर्यटनस्थल का रूप प्रदान नहीं करेंगे; यात्रियों को सभी प्रकार की सुविधाएँ उपलब्ध नहीं करायेंगे; तब तक उसका विकास कैसे होगा, उसके प्रति हम अपने कर्त्तव्य को पूरा कैसे करेंगे, भगवान महावीर के प्रति अपनी श्रद्धा भी कैसे समर्पित करेंगे?

आचार्य श्री विद्यानन्दजी की प्रेरणा से **जो लोग उसके विकास में समर्पित भाव से सक्रिय हैं; उनका सहयोग करना हम सभी का परम कर्त्तव्य है।** वर्तमान में सक्रिय व्यवस्था समिति की ओर से मैं समस्त मुमुक्षु समाज को आश्वस्त करना चाहता हूँ कि वैशाली में समस्त काम दिगम्बर जैन तेरापंथ विधि के अनुसार संपन्न होंगे; पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव भी तेरापंथ के अनुसार ही होगा।

यह आश्वासन मैं उक्त समिति के प्रमुख लोगों से प्राप्त जानकारी के आधार पर दे रहा हूँ। मैं स्वयं उक्त पंचकल्याणक में सक्रियरूप से उपस्थित रहूँगा। **समस्त मुमुक्षु समाज भी तन-मन-धन से सहयोग करें।** हम अपने कर्त्तव्य का निर्वाह अवश्य करेंगे – इस मंगल भावना से अभी यहाँ विराम लेता हूँ। ●

प्रस्तुत संस्करण की कीमत कम करने वाले दातारों की सूची

1.	श्रीमती पुष्पलता जैन (जीजीबाई) ध.प. अजितकुमारजी जैन, छिन्दवाड़ा	301.00
2.	श्री माणकचन्दजी जैन, 'एडपैनवाले' मुम्बई	301.00
3.	श्री कैलाशचन्दजी जैन, ठाकुरगंज	251.00
4.	स्व. धापूदेवी ध.प. स्व. ताराचन्दजी गंगवाल की पुण्य स्मृति में, जयपुर	251.00
5.	श्रीमती कंचनदेवी ध.प. चिरंजीलाल जैन, जयपुर	251.00
6.	स्व. श्री शान्तिनाथजी सोनाज, अकलूज	251.00
7.	श्रीमती पानादेवी मोहनलालजी सेठी, गोहाटी	250.00
8.	श्री रूपेश कापड़िया, टोरंटो	251.00
9.	श्री ए.के. बगड़ा, जयपुर	251.00
10.	श्री पवनकुमारजी जैन, मंगलायतन, अलीगढ़	251.00
11.	श्रीमती लक्ष्मी जैन ध.प. यी.सी. जैन, दिल्ली	251.00
12.	श्रीमती कमलादेवी ध.प. श्री चाँदमलजी जैन की स्मृति में, जयपुर	251.00
	कुल राशि	**3,111.00**